



## चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम.....

दिनांक २७.११.२०२० पृष्ठ संख्या..... २ ..... कॉलम..... २.३ .....

### Varsity develops bio-fortified millet

TRIBUNE NEWS SERVICE

HISAR, NOVEMBER 26

Scientists in the bajra section of the department of genetics and plant breeding in Chaudhary Charan Singh Haryana Agricultural University (HAAU) have developed a new bio-fortified variety of millet.

The HHB 311 variety has been notified and released by the Crop Standards, Notification and Approval Central Sub-Committee of the Department of Agriculture and Cooperation in the Union Ministry of Agriculture and Farmers' Welfare.

The variety has been developed by Dr Ramesh Kumar, Dr Dev Vrat, Dr Virendra Malik, Dr MS Dalal, Dr KD Sahrawat, Dr Yogendra Kumar, Dr SK Pahuja, Dr Anil Kumar, Dr LK Chugh, Dr Narendra Singh, Dr Kushal Raj, Dr M Govindaraj and Dr Anand Kanati.

Vice-Chancellor Samar Singh said the variety con-



Is resistant to downy mildew and matures in between 75 and 80 days

tained high iron and zinc content at 83 mg and 42 mg per kg, respectively. "The HHB 311 variety has the potential of 18 quintal yield per acre. This variety is resistant to downy mildew and matures in between 75 and 80 days," he said.



## चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम..... *Times of India*.....  
दिनांक 27.11.2020 पृष्ठ संख्या..... 4 ..... कॉलम..... 1 .....

### New millet variety developed

**Hisar:** Chaudhary Charan Singh Haryana Agricultural University, Hisar has developed a new bio-fortified variety of millet. The variety has been developed by scientists of the bajra section of the department of genetics and plant breeding, agriculture college. The variety has high iron and zinc content.



## चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम.....  
*देवनाक मासिक*

दिनांक २७. ११. २०२० पृष्ठ संख्या..... ५ कॉलम..... ३-८

**पहल** • अब लौह तत्व और जिंक से भरपूर होगा बाजरा, नई किस्म में अनाज और सूखे चारा की मात्रा भी रहेगी अधिक, वीसी ने की सराहना

## एचएयू ने विकसित की बाजरे की बायोफोर्टिफाइड किस्म एचएचबी 311

भास्कर नूज़ | हिसार

मोटे अनाज के रूप में प्रसिद्ध बाजरा अब लौह तत्व व जिंक से भरपूर होगा। साथ ही अनाज और सूखे चारे की अधिक मात्रा मिलेगी। इसके लिए चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों ने एच.एच.बी. 311 नाम से बाजरे कि नई बायोफोर्टिफाइड किस्म विकसित की है।

इसे कृषि महाविद्यालय के आनुवांशिकी एवं पौध प्रजनन विभाग के बाजरा अनुभाग के वैज्ञानिकों ने विकसित किया है। एचएयू द्वारा विकसित इस किस्म को भारत सरकार के कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय के कृषि एवं सहयोग विभाग की 'फसल मानक, अधिसूचना एवं अनुसोदन केंद्रीय उप-समिति' द्वारा नई दिल्ली में आयोजित बैठक में अधिसचित



एचएयू में बाजरे की उन्नत किस्म विकसित करने वाले वैज्ञानिकों की टीम के साथ कुलपति प्रोफेसर समर सिंह।

व जारी किया गया है। एचएयू के किस्म जोगिया रोगरोधी है व अन्य किस्मों की तुलना में सूखा चारा व उपज अधिक देने की क्षमता है। यह किस्म 75 से 80 दिनों में पक कर तैयार हो जाती है। इसके अलावा विनि के वैज्ञानिकों ने एच.एच.बी. 223, एच.एच.बी. 197, एच.एच.बी. 67 (संरीणित), एच.एच.बी. 226, एच.एच.बी. 234, एच.एच.बी. 272 किस्में भी विकसित की हैं।

इन क्षेत्रों के लिए की गई सिफारिशः अनसंधान निदेशक डॉ. एस.के.

उच्च अनाज और उपजाऊ क्षमता व लौह तत्व की मात्रा और रोग प्रतिरोधिता को ध्यान में रखते हुए एच.एच.बी. 311 को राष्ट्रीय स्तर पर खेती के लिए इसकी सिफारिश की गई है। इसके तहत जोन- जिसमें राजस्थान, गुजरात, हरियाणा, मध्य प्रदेश, पंजाब और दिल्ली और जोन बी में महाराष्ट्र और तमिलनाडु के लिए खरीफ सीजन के लिए इसकी सिफारिश की गई है।

सहरावत ने बताया कि इनकी उच्च अनाज और उपजाऊ क्षमता व लौह तत्व की मात्रा और रोग प्रतिरोधिता को ध्यान में रखते हुए एच.एच.बी. 311 को राष्ट्रीय स्तर पर खेती के लिए इसकी सिफारिश की गई है। इसके तहत जोन- जिसमें राजस्थान, गुजरात, हरियाणा, मध्य प्रदेश, पंजाब और दिल्ली और जोन बी में महाराष्ट्र और तमिलनाडु के लिए खरीफ सीजन के लिए इसकी सिफारिश की गई है।

### जिन्हें गेहूं की एलर्जी उनके लिए बहुत फायदेमंद

बाजरे में मुख्य रूप से 12.8 % प्रोटीन, 4.8 ग्राम वसा, 2.3 ग्राम रेशे, 67 ग्राम कार्बोहाइड्रेट एवं खनिज तत्व जैसे कैल्शियम-10 मिली ग्राम, लौह-6 मिली ग्राम, मैनीशियम-228 मिली ग्राम, फॉस्फोरस-570 मिली ग्राम, सोडियम-10 मिली ग्राम, जिंक 3.4 मिली ग्राम, पोटैशियम-390 मिली ग्राम व कॉपर-1.5 मिली ग्राम पाया जाता है। इसमें गेहूं एवं चावल से अधिक आवश्यक एमिनो अम्ल पाए जाते हैं। बाजरे के दाने का सेवन सुजन रोधी, उच्च रक्तचाप रोधी, कैंसर रोधी होता है।

### वैज्ञानिकों ने विवि का गौरव बढ़ाया : प्रो. समर सिंह

■ विश्वविद्यालय के लिए यह बहुत ही गौरव की बात है कि वैज्ञानिक अपनी कड़ी मेहनत व लगन से विश्वविद्यालय का नाम रोशन कर रहे हैं। बाजरे की नई किस्में विकसित करने वाली पूरी टीम बधाई की पात्र है।

- प्रो. समर सिंह, कुलपति, एचएयू।



## चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम.....

जैनकुमार ३१८०

दिनांक २७. ११. २०२० पृष्ठ संख्या.....५ कॉलम.....१-६

शोध

एचएचू ने विकसित की बाजरे की वायोफोटोफाइड किस्म एचएचबी ३१।

# अब लौह तत्व विजिक से भरपूर होगा बाजरा, टाइपटू मधुमेह को करेगा कम

जागरण संवाददाता, हिसार: मोटे अनाज के रूप में प्रसिद्ध बाजरा अब लौह तत्व व विजिक से भरपूर होगा। अनाज व सूखे चारे की भी अधिक मात्रा मिलती है। इसके लिए चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों ने एचएचबी ३१ नाम से बाजरे की नई वायोफोटोफाइड किस्म विकसित की है। इस किस्म को कृषि विश्वविद्यालय के आनुवांशिकी एवं पौध प्रजनन विभाग के बाजरा अनुभाग के विज्ञानियों ने विकसित किया है। विश्वविद्यालय द्वारा विकसित इस किस्म को भारत सरकार के कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय के कृषि एवं संवादविभाग की फसल मानक, अधिसूचना एवं अनुमोदन केंद्रीय उप-समिति द्वारा नई दिल्ली में आयोजित बैठक में अधिसूचित व जारी कर दिया गया है इस किस्म को विकसित करने वाली टीम में डा.



बाजरे की किस्म एचएचबी ३१ का फाइल फोटो। • पीआरओ

### इन क्षेत्रों के लिए की गई सिफारिश

अनुसंधान निदेशक डा. एसके सहरावत ने बताया कि एचएचबी ३१ को राष्ट्रीय स्तर पर खेती के लिए इसकी सिफारिश की गई है। इसके तहत जौन-ए-जिसमें-राजस्थान, गुजरात, हरियाणा, मध्य प्रदेश, पंजाब और दिल्ली और जौन वी में महाराष्ट्र और तमिलनाडु के लिए खीरीक सीजन के लिए इसकी सिफारिश की गई है।

### विश्वविद्यालय का गौरव बढ़ाया : प्रौ. सिंह

विश्वविद्यालय के लिए यह बहुत ही गौरव की बात है कि वैज्ञानिक अपनी कड़ी मेहनत व लगन से विश्वविद्यालय का नाम रोशन कर रहे हैं। बाजरे की नई किस्मे विकसित करने वाली पूरी टीम बधाई की पात्र है। भविष्य में भी इस प्रकार के शोध कार्य चलते रहेंगे।

रमेश कुमार, डा. देव ब्रात, डा. विरेन्द्र मलिक, डा. एमएस दलाल, डा. केंदी सहरावत, डा. योगेन्द्र कुमार और डा. एसके पाहुजा शामिल हैं। इनके साथ

डा. नरेंद्र सिंह, डा. कुशल राज व डा. एम. गोविंदराज व डा. आनंद कनाति (हेतरबाद) का भी विशेष सहयोग रहा है।

इस किस्म में अन्य किस्मों के

मुकाबले लौह तत्व एवं जिक ८३ व रखरखाव करने पर एचएचबी. ३१ ४२ मिलीग्राम प्रति किलोग्राम पाया किस्म १८.० विवर्टल प्रति एकड़ तक जाता है। सामान्य किस्मों में इनकी पैदावार देने की क्षमता रखती है। यह मात्रा ४५-५५ व २०-२५ मिलीग्राम किस्म जौगिया रोगरोधी है। इसके प्रति किलोग्राम होती है। अच्छा अलावा विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों ने एचएचबी. २२३, एचएचबी. १९७, एचएचबी ६७ (संशोधित), एचएचबी २२६, एचएचबी २३४, एचएचबी २७२ किस्में भी विकसित की हैं।

ये होते हैं बाजरे में मुख्य तत्व बाजरे में मुख्य रूप से १२.८ प्रतिशत प्रोटीन, ४.८ ग्राम वसा, २.३ ग्राम रेशे, ६७ ग्राम कार्बोहाइड्रेट एवं खनिज तत्व जैसे कैलश्यम-१६ मिली ग्राम, लोह-६ मिली ग्राम, मैनीशियम-२२८ मिली ग्राम, फॉर्मिकारस-५७० मिली ग्राम, सोडियम-१० मिली ग्राम, जिंक ३.४ मिली ग्राम, पोटेशियम ३९० मिली ग्राम व कॉर्प-१.५ मिली ग्राम पाया जाता है। बाजरे के दानों का सेवन सूजन रोधी, उच्च रक्तचाप रोधी, कैंसर रोधी होता है एवं इसमें पाए जाने वाले एंटीऑक्सीडेंट यौगिक हृदयादात के जारी हैं। एवं आंत्र के सूजन को कम करते हैं।



हरिभूमि

# हिसार-फतेहाबाद-सिरसा भूमि

रोहतक, शुक्रवार 27 नवंबर 2020

**बाजरे का सेवन टांगप-  
2 डायबिटीज को रोकने  
में सहायक**

हरिभूमि ट्यूज़न ■ हिसार

मोटे अनाज के रूप में प्रसिद्ध बाजरा अब लौह तत्व व जिंक से भरपूर होगा। साथ ही अनाज व सूखे चारे की भी अधिक मात्रा मिलेगी। इसके लिए हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों ने एच.एच.बी. 311 नाम से बाजरे कि नई बायोटेक्नोलॉजी किस्म विकसित की है। इस किस्म को कृषि विश्वविद्यालय के आनुवांशिकी एवं पौधे प्रजनन विभाग के बाजरा अनुभाग के वैज्ञानिकों ने विकसित किया है। विश्वविद्यालय द्वारा विकसित इस किस्म को भारत सरकार के कृषि एवं विसान कल्याण मंत्रालय के कृषि एवं सहवाग विभाग की फसल मानक, अधिकारीय एवं अनुमोदन केंद्रीय उप-समिति द्वारा नई दिल्ली में आयोजित बैठक में अधिसूचित व जारी कर दिया गया है। इसको विकसित करने वाली टीम में डॉ. रेशा कुमार, डॉ. देवब्रत, डॉ. विंद्र मलिक, डॉ. एमएस दलाल, डॉ. केड़ी

दो होते हैं बाजरे  
नें गुरुव्य तत्व

बाजरे में मुख्य रूप से 12.8 प्रतिशत प्रोटीन, 4.9 ग्राम प्रत्या. 2.3 ग्राम रेशे, 67 ग्राम काबोहाइड्रेट एवं डायबिटीज के लिए जाले जाते हैं। इस किस्म के बाजरे में गोटुने लाभ लाभाग व के बराबर होता है जबकि गेहूँ में यह मुख्य प्रोटीन होता है जो की विनियुक्त स्व परिवर्तित रूप, एथोस्टरोलोसिद, एलाजी और आरो निली गाम, जिक 3.4 निली गाम, पोटैशियम 390 निली गाम व कॉर्टिप-15 निली गाम पाया जाता है।

जिन्हें गेहूँ की एलाजी  
उनके लिए फायदेनांद

बाजरा हरियाणा एवं दूसरे अस्त में गेहूँ, धान, मक्का एवं जार के बाद उत्ताप जाले वाली एक गुरुव्य आदानपूर्वक प्रसिद्ध है। इस किस्म के बाजरे में गोटुने लाभाग व के बराबर होता है जबकि गेहूँ में यह मुख्य प्रोटीन होता है जो की विनियुक्त स्व परिवर्तित रूप, एथोस्टरोलोसिद, एलाजी और आरो निली गाम, जिक 3.4 निली गाम, पोटैशियम 390 निली गाम व कॉर्टिप-15 निली गाम पाया जाता है।



हिसार। बाजरे की उन्नत किस्म विकसित करने वाले वैज्ञानिकों की टीम के साथ कूलाली प्रोफेसर समर मिंह, बाजरे की उन्नत किस्म एवं वर्षीय।

विश्वविद्यालय का  
गौरव बढ़ाया

विश्वविद्यालय के लिए यह गौरव की बात है कि वैज्ञानिक अपनी कड़ी लेहजत व लगान से विश्वविद्यालय का नाम रोशन कर रहे हैं। बाजरे की नई विकसित करने वाली पूरी टीम बहार्ड की पात्र है। अविष्य में भी इस प्रकार के शोध कार्य चलते रहेंगे और विश्वविद्यालय का नाम यू.टी. चमकता रहेगा।

सहरावत, डॉ. योगेन्द्र कुमार और डॉ. एस. कुशल राज व डॉ. एम. गोविंदराज व डॉ. आनंद कुमार शमिल थे। इनके साथ डॉ. अनिल कुमार (हैदराबाद) का भी विशेष सहयोग रहा है। इस किस्म में अन्य किस्मों के मुकाबले लौह

तत्व एवं जिंक क्रमशः 83 व 42 मिलीग्राम प्रति किलोग्राम पाया जाता है। सामान्य किस्मों में इनकी मात्रा क्रमशः 45-55 व 20-25 मिलीग्राम प्रति किलोग्राम होती है। अच्छा रखरखाव करने पर एच.एच.बी. 311 किस्म 18.0 विनटल प्रति एकड़ तक पैदावार देने की क्षमता



## चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम.....  
प्रकाशित करने से संबंधित संख्या..... 1-6  
दिनांक २१.११.२०२० पृष्ठ संख्या..... 1-6  
कॉलम.....

# ‘अब लौह तत्व व जिंक से भरपूर होगा बाजरा’

एच.ए.गृ. ने विकसित की बाजरे की गोयोफोर्टफाइड किस्म एच.एच.बी. 311

हिसार, 26 नवम्बर (ब्यूरो): मोटे अनाज के रूप में प्रसिद्ध बाजरा अब लौह तत्व व जिंक से भरपूर होगा। साथ ही अनाज व सूखे चारे की भी अधिक मात्रा मिलेगी। इसके लिए चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के आनुवानिकों एवं पौधे प्रजनन विभाग के बाजरा अनुभाग के वैज्ञानिकों ने एच.एच.बी. 311 नाम से बाजरे की नई बायोफोर्टफाइड किस्म विकसित की है। इसे भारत सरकार के कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय के कृषि एवं सहयोग विभाग की ‘फसल मानक, अधिसूचना एवं अनुमोदन क्रेत्रीय उप-समिति’ द्वारा नई दिल्ली में आयोजित बैठक में अधिसूचित व जारी कर दिया गया है। इस किस्म को विकसित करने वाली टीम में डा. मोरेश कुमार, डा. देवकरत, डा. विंद्र मलिक, डा. एम.एस. दलाल, डा. के.डी. सहरावत, डा. योगेन्द्र कुमार और डा. एस.के. पाहुज शमिल थे। इनके साथ डा. अनिल कुमार, डा. एल.के. चूध, डा. नरेंद्र सिंह, डा. कुशल राज व डा. एम. गोविंदराज व डा. आनंद कनानी (हैदराबाद) का भी विशेष सहयोग रहा है।

### 18 क्विंटल प्रति एकड़ पैदावार देने की क्षमता

इस किस्म में अन्य के मुकाबले लौह तत्व एवं जिंक क्रमशः 83 व 42 मिलीग्राम प्रति किलोग्राम पाया जाता है। सामान्य किस्मों में इनकी मात्रा क्रमशः 45-55 व 20-25



वैज्ञानिकों की टीम के साथ कुलपति प्रो. समर सिंह व बाजरे की उन्नत किस्म एच.एच.बी.-311 का फाइल फोटो।

मिलीग्राम प्रति किलोग्राम होती है। अच्छा रखरखाव करने पर ऐवावार देने की क्षमता रखती है। एक किस्म 18.0 क्विंटल प्रति एकड़ तक है एवं किस्मों की तुलना में सूखा चारा व उपज अधिक देने की क्षमता है। यह किस्म 30 से 80 दिनों में पककर तैयार हो जाती है। इसके अलावा विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों ने एच.एच.बी. 223, एच.एच.बी. 197, एच.एच.बी. 67 (संसोधित), एच.एच.बी. 226, एच.एच.बी. 234, एच.एच.बी. 272 किस्में भी विकसित की हैं।

### इन क्षेत्रों के लिए की गई सिफारिश

अनुसंधान निदेशक डा. एस.के. सहरावत ने बताया कि इनकी उच्च अनाज और उपजाऊ क्षमता व लौह तत्व की मात्रा और रोग प्रतिरोधकता को ध्यान में रखते हुए एच.एच.बी. 311 को राष्ट्रीय सर पर खेती के लिए इसको सिफारिश की गई है। इसके तहत जोन-ए जिसमें राजस्थान, गुजरात, 2.3 ग्राम रेशे, 67 ग्राम कार्बोहाइड्रेट एवं खनिज तत्व जैसे

### जिंहे गेहूं की एलर्जी उनके लिए फायदेमंद

बाजरा हरियाणा एवं पूरे भारत में गेहूं, धान, मक्का एवं ज्वार के बाद उत्तर जाने वाली एक मुख्य खाद्यान् फसल है। इसके दानों में गेहूं नाम के बाबूर होता है जबकि गेहूं में यह मुख्य प्रोटीन होता है जो की सिलिंड्रिक, रुच प्रतिरक्षित रोग, एथरोरकलरोसिस, एलर्जी और आत्मी की पारगम्यता बीमारी का मुख्य कारण है। इसलिए उक्त बीमारी वाले लोगों को डॉक्टर द्वारा बाजरा खाने की सलाह दी जाती है। बाजरे का सेवन टाइप-2 डायबिटीज को रोकने में सहायक है। इनकी इन्हीं विशेषताओं के कारण इसे न्यूट्री सोरीयल नाम दिया गया है।

### बाजरे में मुख्य तत्व

बाजरे में मुख्य रूप से 12.8 प्रतिशत प्रोटीन, 4.8 ग्राम वसा,

कैल्शियम-16 मिली ग्राम, लौह-6 मिली ग्राम, मैनीशियम-228 मिली ग्राम, फॉर्फोरेस-570 मिली ग्राम, सोडियम-10 मिली ग्राम, जिंक 3.4 मिली ग्राम, पोटैशियम 390 मिली ग्राम व कॉर्प-1.5 मिली ग्राम पाया जाता है। इसमें गेहूं एवं चावल से अधिक आवश्यक प्रीमो पाया जाता है। बाजरे के दानों का सेवन सूजन रोधी, उच्च रक्तचाप रोधी, कैंसर रोधी होता है एवं इसमें पाए जाने वाले एंटीऑक्सीडेंट यौगिक हृदयाश्वात के जौखिम एवं ऑत्र के सूजन को कम करने में मदद करते हैं।

### हर प्रकार की भूमि में ले सकते हैं उत्पादन

बाजरे में गेहूं, धान, मक्का एवं ज्वार की तुलना में शुष्क एवं निम्न उपजाऊ क्षमता, उच्च लवण युक्त भूमि एवं उच्च तापमान के प्रति अधिक प्रतिरोधक क्षमता पाई जाती है। अतः इस फसल का उत्पादन ऐसी भूमि में भी किया जा सकता है जहां पर अन्य फसल लेना संभव नहीं। उन्नत किस्मों, अच्छी सर्व क्रियाओं व रोग रोधी किस्मों के विकसित होने से बाजरा की पैदावार व उत्पादकता बढ़ रही है।



## चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम.....

ज्ञानभूमि

दिनांक २७.११.२०२० पृष्ठ संख्या २ कॉलम १५३

### हकूमि ने विकसित की लौह तत्व व जिंक से भरपूर बाजरे की एचएचबी-311 किस्म

अमर उजला व्यूरो

हिसार। मोटे अनाज के रूप में प्रसिद्ध बाजरा अब लौह तत्व व जिंक से भरपूर होगा। साथ ही अनाज व सूखे चारे की भी अधिक मात्रा मिलेगी। इसके लिए चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय (हकूमि) के वैज्ञानिकों ने एचएचबी-311 नाम से बाजरे कि नई बायोफोर्टफाइड किस्म विकसित की है।

इस किस्म को कृषि महाविद्यालय के आनुवंशिकी एवं पौध प्रजनन विभाग के बाजरा अनुभाग के वैज्ञानिकों ने विकसित किया है। विश्वविद्यालय द्वारा विकसित इस किस्म को भारत सरकार के कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय

के कृषि एवं सहयोग विभाग की %फसल मानक, अधिसूचना एवं अनुमोदन केंद्रीय उपसमिति% द्वारा नई दिल्ली में आयोजित बैठक में अधिसूचित व जारी कर दिया गया है। अन्य किस्मों के मुकाबले अधिक लौह तत्व : इस किस्म में लौह तत्व एवं जिंक क्रमशः 83 व 42 मिलीग्राम प्रति किलोग्राम पाया जाता है। सामान्य किस्मों में इनकी मात्रा क्रमशः 45-55 व 20-25 मिलीग्राम प्रति किलोग्राम होती है। अच्छा रखरखाव करने पर एचएचबी-311 किस्म 18 किवंटल प्रति एकड़ तक पैदावार देने की क्षमता रखती है। यह किस्म जोगिया रोगरोधी है। यह किस्म 75 से 80 दिनों में पककर तैयार हो जाती है। इस किस्म

“ विश्वविद्यालय का गैरव बढ़ाया

यह विश्वविद्यालय के लिए गैरव की बात है। बाजरे की नई किस्में विकसित करने वाली पूरी टीम बधाई की पात्र है। प्रदेश सरकार के फसल विविधीकरण को लेकर किए जा रहे प्रयासों में बाजरा अहम भूमिका निभा सकता है।

- प्रोफेसर समर सिंह, कुलपति, हरियाणा कृषि विव, हिसार।

को विकसित करने वाली टीम में डॉ. रमेश कुमार, डॉ. देवब्रत, डॉ. विंद्र मलिक, डॉ. एमएस दलाल, डॉ. केडी सहरावत, डॉ. योगेंद्र कुमार और डॉ. एसके पाहुजा शामिल रहे।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार  
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
सच कहूँ	<b>27.11.2020</b>	--	--

उपलब्धि

एचएयू ने विकसित की बाजरे की बायोफॉर्टिफाइड किस्म एचएचबी-311

**अब लौह तत्व व जिंक से भरपूर होगी बाजारे की फसल**

हिसारसच कहूँ/सदीपं सिंहामा।  
मोट अनजा के रुप में प्रेसिद्ध बाजा  
अब लौह तत्व व जिंक से भरपूर  
होगा। साथ ही अनजा व सुखे चारे  
को भी अधिक मात्रा मिलाया। इसके  
लिए हिसार सिव लव्हियाणा कृपि  
विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों ने  
एच्चयं-311 नाम से ज्ञाते कि  
इस यांत्रिकीयीं बहुत सिव विश्व



नई वायाकोटार्डड लिख संवित्रकासी करते हैं। इस किस्म के संवित्रकासी को ही नामविद्यालयों के अनुग्राहकों एवं पैदा प्रजनन विभागों द्वारा अनुमति के बैंकानिंगों के संवित्रकासी किया जाता है। विश्वविद्यालय द्वारा संवित्रकासी इस किस्म को भारत सरकार के कृपी एवं विस्तृत कल्याण मंत्रालय के कृपी एवं सहायता विभाग द्वारा की 'फैसला नामक' अधिकारी एवं अनुमोदन देनेवाले उप-सचिवीति द्वारा नई विद्यालयों में संवित्रकासी बैंकों के अधिविधक व जारी कर दिया जाता है। इस किस्म को संवित्रकासी करने वाली टीम में डॉ. सेसल कुमार, डॉ. देवेश, डॉ. विजेन्द्र मलिक, डॉ. एमएस दत्तल, डॉ. कैटी विजयनाथ, डॉ.

गोपेन्द्र कुमार और डॉ. एप्सने पाहुड़ा जापानिल थे। इनके साथ डॉ. अवनंद कुमार, डॉ. एलके चूध, डॉ. नरेंद्र सिंह, डॉ. कुशालकर व डॉ. एम. बाबूदास चौधरी व डॉ. अवनंद कुमार (हैदरबाद) का भी विशेष सहायता गता है। इस किस्म में अन्य किस्मों के प्रयोगों लिए लोट एवं चिकित्सा क्रमसः 23 व 42 मिलियार रुपये वित्त किसियां पाया जाता है। सामान्य किस्मों में इनकी मात्रा क्रमसः 45-55 व 20-25 मिलियार रुपये वित्त किसियां पाया जाता है। व अन्य किस्मों को तुलना में सूखा चारा व उत्तर अफिक देने के बाहर है। यह किस्म 75 से 80 दिनों में प्रकार तैयार हो जाती है। इनके अलावा एवं वित्त किस्मों के बायानिकों ने एचएचबी 223, एचएचबी 197, एचएचबी 62 (स्टीरोपिघत), एचएचबी 226, एचएचबी 234, एचएचबी 272 किस्में भी चिकित्सा की की है।

**र प्रकार की भूमि में ले  
सकते हैं उत्पादन**

उच्च तापमान के प्रति प्रतिरोधक क्षमता पाई जाती है। इस फसल का उत्पादन ऐसी गति किया जा सकता है जहाँ फसल लेना संभव न हो। किस्मों, अच्छी सत्यवाक व रोग रोधी किस्मों के बीच होने से बाजारों की व्यवस्था बदल दी जाती है।

अन्वयिता द्वारा लिखी गई अधिकारी

डॉक्टर द्वारा बाजरा खाने की सलाह दी जाती है। बाजरे का सेवन टाइ-2-डिएटीज़ को रोकने में सहायक है। इसकी इन्हीं विशेषताओं के कारण इसे न्यूट्री सीरियल नाम दिया गया है।

**ये होते हैं बाजरे में मुख्य**

सिक्खारश का गड है। इसके तहत जोन-ए जिसमें राजस्थान, गुजरात, हरियाणा, मध्य प्रदेश, पंजाब और दिल्ली और जोन बी में महाराष्ट्र और

तमिन्दनाहु के लिए तरीके सोचन के लिए इसकी शिकायती की है।  
**जिन्हें गेहू की एलजी उनके**  
**एवं बहुत गेहूदमें**  
 गोजरा बारियास्या एवं पूरे भारत में गेहू, धान, मसाला एवं जड़पत्र के बाद उन्हें जानी वाली एक मुख्य खाद्यान्न फसल है। इस किंवद्ध के माने में गुणवत्ता लायगम न के दबावर होता है जबकि गेहू एवं यह मुख्य प्रटीन होता है जो भी असंतुष्टिकारी रूप से उपयोग किया जाता है। इसके लिए गेहू के बाद उनके एवं दोस्रों लोगों के लिए अतिरिक्त खाद्यान्न के लिए इसकी उपलब्धता लाते रहती है।



## चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
हैलो हिसार	27.11.2020	--	--

### अब लौह तत्व व जिंक से भरपूर होगा बाजारा एचएयू ने विकसित की बाजरे की बायोफोर्टिफाइड किस्म एचएचबी 311

हैलो हिसार न्यूज़

हिसार : मोटे अनाज के रूप में प्रसिद्ध बाजारा अब लौह तत्व व जिंक से भरपूर होगा। साथ ही अनाज व सूखे चारे की भी अधिक मात्रा मिलेगी। इसके लिए चौधरी

चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों ने एच.एच.बी. 311 नाम से बाजरे कि नई बायोफोर्टिफाइड किस्म विकसित की है। इस किस्म को कृषि महाविद्यालय के आनुवांशिकी एवं पौध प्रजनन विभाग के बाजरा अनुभाग के वैज्ञानिकों ने विकसित किया है। विश्वविद्यालय द्वारा विकसित इस किस्म को भारत सरकार के कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय के कृषि एवं सहयोग विभाग की 'फसल मानक, अधिसूचना एवं अनुमोदन केंद्रीय उप-समिति' द्वारा नई दिल्ली में आयोजित बैठक में अधिसूचित व जारी कर दिया गया है। इस किस्म को विकसित करने वाली टीम में डॉ. रमेश कुमार, डॉ. देव ब्रत, डॉ. विरेंद्र मलिक,



डॉ. एम.एस. दलाल, डॉ. के.डी. सहरावत, डॉ. योगेन्द्र कुमार और डॉ. एस.के. पाहुजा शामिल थे। इनके साथ डॉ. अनिल कुमार, डॉ. एल.के. चूध, डॉ. नरेंद्र सिंह, डॉ. कुशल राज व डॉ. एम. गोविंदराज व डॉ. आनंद कनाति (हैदरबाद) का भी विशेष सहयोग रहा है।

इस किस्म में अन्य किस्मों के मुकाबले लौह तत्व एवं जिंक क्रमशः 83 व 42 मिलीग्राम प्रति किलोग्राम पाया जाता है। सामान्य किस्मों में इनकी मात्रा क्रमशः 45-55 व 20-25 मिलीग्राम प्रति किलोग्राम होती है। अच्छा रखरखाव करने पर एच.एच.बी. 311 किस्म 18.0 विंटल प्रति एकड़ तक पैदावार देने की क्षमता रखती है। यह किस्म जोगिया रोगरोधी है व अन्य किस्मों की तुलना में सूखा चारा व

उपज अधिक देने की क्षमता है। यह किस्म 75 से 80 दिनों में पककर तैयार हो जाती है। इसके अलावा विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों ने एच.एच.बी.

223, एच.एच.बी. 197, एच.एच.बी. 67 (संशोधित), एच.एच.बी. 226, एच.एच.बी. 234, एच.एच.बी. 272 किस्में भी विकसित की हैं।

अनुसंधान निदेशक डॉ. एस.के. सहरावत ने बताया कि इनकी उच्च अनाज और उपजाऊ क्षमता व लौह तत्व की मात्रा और रोग प्रतिरोधिकता को ध्यान में रखते हुए एच.एच.बी. 311 को राष्ट्रीय स्तर पर खेती के लिए इसकी सिफारिश की गई है। इसके तहत जोन-ए जिसमें राजस्थान, गुजरात, हरियाणा, मध्य प्रदेश, पंजाब और दिल्ली और जोन बी में महाराष्ट्र और तमिलनाडु के लिए खरीफ सीजन के लिए इसकी सिफारिश की गई है।



## चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
एचआर ब्रेकिंग न्यूज	27.11.2020	--	--

# अब लौह तत्व व जिंक से भरपूर होगा बाजारा एचएयू ने विकसित की बाजारे की बायोफोर्टिफाइड किस्म एचएचबी 311

एचआर ब्रेकिंग न्यूज

हिसार। मोटे अनाज के रूप में प्रसिद्ध बाजारा अब लौह तत्व व जिंक से भरपूर होगा। साथ ही अनाज व मूस्खे चारे की भी अधिक मात्रा मिलेगी। इसके लिए चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों ने एच.एच.बी. 311 नाम से बाजारे कि नई बायोफोर्टिफाइड किस्म विकसित की है।

इस किस्म को कृषि महाविद्यालय के अनुभागिकों एवं पौध प्रजनन विभाग के बाजारा अनुभाग के वैज्ञानिकों ने विकसित किया है। विश्वविद्यालय द्वारा विकसित इस किस्म को भारत सरकार के कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय के कृषि एवं सहयोग विभाग की 'फसल मानक, अधिकृतमूल्य एवं अनुमोदन केंद्रीय उपसमिति' द्वारा नई दिल्ली में आयोजित बैठक में अधिकृत व जारी कर दिया गया है। इस किस्म को विकसित करने वाली टीम में डॉ. रमेश कुमार, डॉ. देव घ्रात, डॉ. विंदु मलिक, डॉ. एम.एस. दलाल, डॉ. केंद्री सहरावत, डॉ. योगेन्द्र कुमार और डॉ. एस.के. पहुंचा शामिल थे। इनके साथ डॉ. अमित कुमार, डॉ. एल.के. चूध, डॉ. नरेन्द्र सिंह, डॉ. कुशल राज व डॉ. एम. गोविंदराज व डॉ. अनंद कन्नाटि (हेडरावाद) का भी विशेष सहयोग रहा है। इस किस्म में अन्य किस्मों के



### इन क्षेत्रों के लिए की गई सिफारिश

अनुसारंगन निदेशक डॉ. एस.के. सहरावत ने कहा कि इनकी डब्ल्यू अनाज और उपजाक धनाता व लौह तत्व की मात्रा और ऐन प्रतिरोधिता की गई है। इसके लाभ जैन-ए-सिस्में तापमान तुलसात, हरियाणा, मध्य प्रदेश, पंजाब और रिहाई और जान की में भारतादृष्ट और तापिकाइड के लिए खानीक संचयन के लिए इसकी सिफारिश की गई है। इसके लिए इसकी सिफारिश की गई है।

जिन्हें गेहूँ की लालसी उनके लिए बहुत फायदेमंद : बाजारा हरियाणा वर्ष पुरे भारत में गेहूँ, छान, बम्बा एवं ज्वार के बाद उगाई जाने वाली एक मुख्य खाद्यान कसल है। इस किस्म के लाभ में भूटेन लगभग न के बारबर होता है जबकि गेहूँ में यह मुख्य योगदान होता है जो की सिलिंजक, स्व. प्रिंसिपियल रोग, एपेंसेक्सलोमिस्स, एस्टर्न और ओर्लो की पारागम्बन विमर्शों का मुख्य कारण है। इसके उपर चौंचारी वाले लोगों की डीफर द्वारा बाजार खाने की मसलह दी जाती है। बाजार का सेवन टाप्प-2 डायाक्टीन की दोषने में महत्वपूर्ण है। इनकी इनी विशेषताओं के कारण इसे न्यूट्रो सोर्सियल नाम दिया गया है।

मुकाबले लौह तत्व एवं जिंक क्रमशः 83 व 55 व 20-25 मिलीग्राम प्रति किलोग्राम 42 मिलीग्राम प्रति किलोग्राम पाया जाता है। होती है। अच्छा रखरखाव करने पर सामान्य किस्मों में इनकी मात्रा क्रमशः 45- एच.एच.बी. 311 किस्म 18.0 किलोग्राम

ये होते हैं बाजारे में मुख्य तत्व बाजारे में मुख्य रूप से 12.8 प्रतिशत प्रोटीन, 4.8 ग्राम वर्गा, 2.3 ग्राम रेसे, 67 ग्राम कार्बोहाइड्रेट एवं खनिन तत्व जैसे कैल्शियम-16 मिली ग्राम, लौह-6 मिली ग्राम, पैनीशियम-228 मिली ग्राम, फॉस्फोरस-570 मिली ग्राम, जिंक 3.4 मिली ग्राम, पॉटेशियम 390 मिली ग्राम व कार्प-1.5 मिली ग्राम पाया जाता है। इसमें गेहूँ एवं चावल से अधिक आवश्यक एमिनो अम्ल पाए जाते हैं। बाजारे के दानों का संचयन सूखन रोधी, उच्च रक्तचाप रोधी, कैंसर रोधी होता है एवं इसमें पाए जाने वाले एंटीऑक्सीडेंट योग्यक फार्मासियल हदयात्रा के जीवितम एवं औषत के सूखन को कम करने में मदद करते हैं।

प्रति पकड़ तक पैदावार देने की क्षमता रखती है। यह विस्म जौगिरा रोगरोधी है व अन्य किस्मों की तुलना में मूख्य चारा व उपज अधिक देने की क्षमता है।

यह किस 75 से 80 दिनों में पकाकर तैयार हो जाती है। इसके अलावा विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों ने एच.एच.बी. 223, एच.एच.बी. 197, एच.एच.बी. 67 (संशोधित), एच.एच.बी. 226, एच.एच.बी. 234, एच.एच.बी. 272 किस्में भी विकसित की हैं।



## चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
पांच बजे न्यूज	26.11.2020	--	--

# अब लौह तत्व व जिंक से भरपूर होगा बाजरा

एप्पू ने विकसित की  
बाजरे की बायोफोटफाइड  
किस्म एचएचवी 311

पांच बजे व्याप

हिसार। मोटे अनाज के रूप में प्रसिद्ध बाजरा अब लौह तत्व व जिंक से भरपूर होगा। सच्च ही अनाज व सूखे चारों को भी अधिक मात्रा मिलेगी। इसके लिए चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों ने एच.एच.वी. 311 नाम से बाजरे कि नई बायोफोटफाइड किस्म विकसित की है। इस किस्म को कृषि महाविद्यालय के अनुबंधिति एवं पीथ प्रजनन विभाग के बाजरा अनुभाग के वैज्ञानिकों ने विकसित किया है। विश्वविद्यालय द्वारा विकसित इस किस्म को भारत सरकार के कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय के कृषि एवं सहायग विभाग की फसल मानक, अधिकृत्यना एवं अनुमोदन केर्डीय उत्तर-पश्चिमी द्वारा नई दिल्ली में आयोजित बैठक में अधिसूचित व जारी कर दिया गया है। इस किस्म को विकसित करने वाली टीम में डॉ. रमेश कुमार, डॉ. देव ब्रत, डॉ. विरेंद्र मलिक, डॉ. एमस दलाल, डॉ. केशी सहयोगी, डॉ. योगेन्द्र कुमार और डॉ. एसके पाहुजा शामिल थे। इनके साथ डॉ.



अनिल कुमार, डॉ. एकें चौध, डॉ. नरेंद्र मिश्ह, डॉ. कुमार गोप, डॉ. पं. गोविंदरज व डॉ. आनंद कुमार (द्वारा) का भी विशेष सहयोग रहा है।

इस किस्म में अन्य किसिमों के मुकाबले लौह तत्व एवं जिंक कानून 83 व 42 मिलीग्राम प्रति किलोग्राम पाया जाता है। बताया कि इनकी उच्च अनाज और उच्चाक शमता व लौह तत्व की मात्रा और रोग प्रतिरोधकता को घान में खेते हुए एच.एच.वी. 311 को गोद्योग सरप पर्याप्ती के लिए इसकी सिफारिश की गई है। इसके तहत जन-ए.विसमें राजस्थान, गुजरात, हरियाणा, मध्य प्रदेश, जंजीर और दिल्ली और जोन बी में महाराष्ट्र और तमिलनाडु के लिए खणीक किसिमों की तैयारी में सूझा चारा व उच्च अधिक देने की शक्ति है। यह किस्म 75 से 80 दिनों में प्रक्रिया तैयार हो जाती है। इसके अलावा विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों ने

एच.एच.वी. 223, एच.एच.वी. 197, एच.एच.वी. 67 (संसारित), एच.एच.वी. 226, एच.एच.वी. 234, एच.एच.वी. 272 किस्में भी विकसित की है।

इन क्षेत्रों के लिए को नई सिफारिश अनुसंधान निदेशक डॉ. एकें सहायता ने बताया कि इनकी उच्च अनाज और उच्चाक शमता व लौह तत्व की मात्रा और रोग प्रतिरोधकता को घान में खेते हुए एच.एच.वी. 311 को गोद्योग सरप पर्याप्ती के लिए इसकी सिफारिश की गई है। इसके तहत जन-ए.विसमें राजस्थान, गुजरात, हरियाणा, मध्य प्रदेश, जंजीर और दिल्ली और जोन बी में महाराष्ट्र और तमिलनाडु के लिए खणीक किसिमों की तैयारी प्रारंभिक रूप से जारी हो जाती है। इनके तहत जन-ए.विसमें जौगांव, गोवा, नाशिक, असाम, गोपनीयम-16 मिली ग्राम, लौह-6 मिली ग्राम, मैनीशियम-10 मिली ग्राम, सोडियम-10 मिली ग्राम, जिंक 3.4 मिली ग्राम, प्रोटीनियम 390 मिली ग्राम व कार्पर-1.5 मिली ग्राम पाया जाता है। इसमें गेहूं एवं चावल से

चाजरा हरियाणा एवं पूरे भूमि में मौहूं, धान, मक्का एवं ज्वार के बाद उगाई जाने वाली एक मुख्य खाद्यालय फसल है। इसके लाभा में ग्लूटेन लाभा है जबकि गेहूं में यह मुख्य प्रोटीन होता है जो वाजरे की सिविलियन, स्वास्थ्यविकासी, रोग, डायबिटीज और अंतों को पायामरात्रि जीवनी का मुख्य कारण है। इसके उच्च तापमान के प्रति अधिक प्रतिरोधक बहाना पाई जाती है। अतः इस फसल का उत्पादन ऐसी भूमि में भी किया जा सकता है जहाँ पर अन्य फसल लेना संभव न हो। उत्तर कियाम, अच्छी सदा क्रियाओं व रोग से रोधी कियों के विकसित होने से बाजरा की पैदावार व उत्पादकता बढ़ रही है।

विश्वविद्यालय का गोपन बढ़ाया : प्र. समर सिंह विश्वविद्यालय के लिए यह बहुत ही गौरव की बात है कि वैज्ञानिक अपनी कड़ी महेनत व लालन से विश्वविद्यालय का नाम रोकन कर रहे हैं। बाजरे की नई किस्में विकसित करने वाली परी टीम बधाई की पात है। भविष्य में भी इस प्रकार के शोध कार्य चलाए रहेंगे और विश्वविद्यालय का नाम यूं ही चमकता रहेगा। इनके अलावा प्रदेश सरकार के फसल विविधकरण को लेकर विवाद जा रहे प्रयत्नों में बाजरा अम भूमिका निभा सकता है।



## चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
समस्त हरियाणा न्यूज	26.11.2020	--	--

## लौह तत्व व जिंक से भरपूर होगा बाजरा



एचएयू ने  
विकसित की  
बाजरे की  
बायोफोटिफाइड  
किस्म  
एचएचबी-311

समस्त हरियाणा न्यूज

हिसार। मोटे अनाज के रूप में प्रसिद्ध बाजरा अब लौह तत्व व जिंक से भरपूर होगा। साथ ही अनाज व सुखे चारे की भी अधिक मात्रा मिलेगी। इसके लिए चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों ने एच.एच.बी. 311 नाम से बाजरे कि नई बायोफोटिफाइड किस्म विकसित की हैं। इसके किस्म को कृषि महाविद्यालय के आनुवांशिकी एवं पौध प्रजनन विभाग के बाजरा अनुभाग के वैज्ञानिकों ने विकसित किया है। विश्वविद्यालय द्वारा विकसित इस किस्म को भारत सरकार के कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय के कृषि एवं सहयोग विभाग की 'फसल मानक, अधिसूचना' एवं अनुमोदन केंद्रीय उप-समिति' द्वारा नई दिली में आयोजित बैठक में अधिसूचित व जारी कर दिया गया है।

इस किस्म में अन्य किस्मों के मुकाबले लौह तत्व एवं जिंक क्रमशः 83 व 42 मिलीग्राम प्रति किलोग्राम पाया जाता है। सामान्य किस्मों में इनकी मात्रा क्रमशः 45-55 व 20-25 मिलीग्राम प्रति किलोग्राम होती है। अच्छा रखरखाव करने पर एच.एच.बी. 311 किस्म 18.0 किंटल प्रति एकड़ तक पैदावार देने की क्षमता रखती है। यह किस्म जोगिया रोगरोधी है व अन्य



### इनका रहा योगदान

इस किस्म को विकसित करने वाली टीम में डॉ. रमेश कुमार, डॉ. देव ब्रत, डॉ. विरेंद्र मलिक, डॉ. एम.एस. दलाल, डॉ. के.डी. सहरावत, डॉ. योगेन्द्र कुमार और डॉ. एस.के. पाहुजा शामिल थे। इनके साथ डॉ. अनिल कुमार, डॉ. एल.के. चूध, डॉ. नरेंद्र सिंह, डॉ. कुशल राज व डॉ. एम. गोविंदराज व डॉ. आनंद कनाति (हैदराबाद) का भी विशेष सहयोग रहा है।

किस्मों की तुलना में सूखा चारा व उपज अधिक देने की क्षमता है। यह किस्म 75 से 80 दिनों में पककर तैयार हो जाती है। इसके अलावा विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों ने एच.एच.बी. 223, एच.एच.बी. 197, एच.एच.बी. 67 (संशोधित), एच.एच.बी. 226, एच.एच.बी. 234, एच.एच.बी. 272 किस्में भी विकसित की हैं।

### इन क्षेत्रों के लिए की गई सिफारिश

अनुसंधान निदेशक डॉ. एस.के. सहरावत ने बताया कि इनकी उच्च अनाज और उपजाऊ क्षमता व लौह तत्व की मात्रा और रोग प्रतिरोधिकता को ध्यान में रखते हुए एच.एच.बी. 311 को राष्ट्रीय स्तर पर खेती के लिए इसकी सिफारिश की गई है। इसके तहत जोन-ए जिसमें राजस्थान, गुजरात, हरियाणा, मध्य प्रदेश, पंजाब और दिल्ली और जोन बी में महाराष्ट्र और तमिलनाडु के लिए खरीफ सीजन के लिए इसकी सिफारिश की गई है।



## चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
सिटी पल्स	26.11.2020	--	--

# अब लौह तत्व व जिंक से भरपूर होगा बाजारा

## एचएयू ने विकसित की बाजारे की बायोफोर्टिफाइड किस्म एचएचबी 311



हिसार। बाजारे की उत्तर किस्म विकसित करने वाले वैज्ञानिकों की टीम के साथ कुलपाता प्रा. समर सिंह।



बाजारे की उत्तर किस्म एच.एच.बी. 311 का फाइल फोटो।

सिटी पल्स न्यूज, हिसार। हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों ने एच.एच.बी. 311 नाम से बाजारे की नई बायोफोर्टिफाइड किस्म विकसित की है। इस किस्म को कृषि महाविद्यालय के आनुवांशिकी एवं पौध प्रजनन विभाग के बाजारा अनुभाग के वैज्ञानिकों ने विकसित किया है। विश्वविद्यालय द्वारा विकसित की भारत समकार के कृषि एवं सहजेग विभाग की 'फसल मानक, अधिसूचना एवं अनुमोदन केंद्रीय उत्तर-समिति' द्वारा नई दिल्ली में आयोजित बैठक में अधिसूचित व जारी कर दिया गया है। इस किस्म को विकसित करने वाली टीम में डॉ. संसेश कुमार, डॉ. देव बत, डॉ. विंद्र मलिक, डॉ. एम. एस. दत्ताल, डॉ. के. डी. सहायत, डॉ. योगेन्द्र कुमार और डॉ. एस. के. पाहुंच शामिल थे। इनके साथ डॉ. अनिल कुमार, डॉ. एल. के. चुध,

डॉ. नरेंद्र सिंह, डॉ. कुशल राज व डॉ. एम. गोविंदराज व डॉ. आनंद कनाति का भी विशेष सहयोग रहा है। अच्छा रखखाव करने पर 197, 197, एच.एच.बी. 67 (सशाधित), एच.एच.बी. 226, एच.एच.बी. 234, एच.एच.बी. 272 किमी भी विकसित की हैं। इन क्षेत्रों के लिए की गई जोगिया रोगरोधी है व अन्य किस्मों की तुलना में सूखा चारा व उपज अधिक देने की क्षमता है। यह किस्म अनुसंधान निदेशक डॉ. एस. के. सहरावत ने बताया कि इनकी उच्च

जाती है। इसके अलावा विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों ने एच.एच.बी. 223, एच.एच.बी. 197, एच.एच.बी. 67 (सशाधित), एच.एच.बी. 226, एच.एच.बी. 234, एच.एच.बी. 272 किमी भी विकसित की हैं। इन क्षेत्रों के लिए की गई सिफारिश की गई है। विश्वविद्यालय का गौरव बढ़ाया : कुलपति विश्वविद्यालय के लिए यह बहुत ही गौरव की बात है कि वैज्ञानिक अपनी कड़ी मेहनत व लगन से राजस्थान, गुजरात, हरियाणा, मध्य प्रदेश, पंजाब और दिल्ली और जोन बी में महाराष्ट्र और तमिलनाडु के लिए खरीफ सीजन के लिए इसकी पात्र है।



## चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
पाठक पक्ष	26.11.2020	--	--

# अब लौह तत्व व जिंक से भरपूर होगा बाजरा

एचएयू ने विकसित की बाजरे की बायोफोर्टिफाइड किस्म एचएचबी 311



### पाठकपक्ष न्यूज़

हिसार, 26 नवम्बर : मोटे अनाज के रूप में प्रसिद्ध बाजरा अब लौह तत्व व जिंक से भरपूर होगा। साथ ही अनाज व सुखे चारे की भी अधिक मात्रा मिलेगी। इसके लिए चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों ने एच.एच.बी. 311 नाम से बाजरे कि नई बायोफोर्टिफाइड किस्म विकसित की हैं। इस किस्म को कृषि महाविद्यालय के आनुवांशिकी एवं पौध प्रजनन विभाग के बाजरा अनुभाग के वैज्ञानिकों ने विकसित किया है। विश्वविद्यालय द्वारा



विकसित इस किस्म को भारत सरकार के कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय के कृषि एवं सहयोग विभाग की 'फसल मानक, अधिसूचना एवं अनुमोदन केंद्रीय उप-समिति' द्वारा नई दिल्ली में आयोजित बैठक में अधिसूचित व जारी कर दिया गया है।

### विश्वविद्यालय का गौरव बढ़ाया : प्रो. समर सिंह

विश्वविद्यालय के लिए यह बहुत ही गौरव की बात है कि वैज्ञानिक अपनी कड़ी मेहनत व लगन से विश्वविद्यालय का नाम रोशन कर रहे हैं। बाजरे की नई किस्में विकसित करने वाली पूरी टीम बधाई की पात्र है। भविष्य में भी इस प्रकार के शोध कार्य चलते रहेंगे और विश्वविद्यालय का नाम यूं ही चमकता रहेगा। इसके अलावा प्रदेश सरकार के फसल विविधिकरण को लेकर किए जा रहे प्रयासों में बाजरा अहम भूमिका निभा सकता है।

है। सामान्य किस्मों में इनकी मात्रा क्रमशः 45-55 व 20-25 मिलीग्राम प्रति किलोग्राम होती है।



## चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
नम छोर	26.11.2020	--	--

### हकृवि वैज्ञानिकों ने लौह तत्व एवं जिंक से भरपूर बाजरे की किस्म को किया विकसित



हिसार/ 26 नवंबर/रिपोर्टर  
मोट अनाज के रूप में प्रसिद्ध बाजरा अब लौह तत्व व जिंक से भरपूर होगा। साथ ही अनाज व सूखे चारे की भी अधिक मात्रा मिलेगी। इसके लिए चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कृषि महाविद्यालय के आनुवांशिकी एवं पौध प्रजनन विभाग के बाजरा अनुभाग के वैज्ञानिकों ने एचएचबी 311 नाम से बाजरे कि नई बायोफोटोफाइड किस्म को विकसित किया है। इस किस्म को भारत सरकार के कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय के कृषि एवं सहयोग विभाग की 'फसल मानक, अधिसूचना एवं अनुमोदन केंद्रीय उप-समिति' द्वारा नई दिल्ली में आयोजित बैठक में अधिसूचित व जारी कर दिया गया है। इस किस्म को विकसित करने वाली टीम में डॉ. रमेश कुमार, डॉ. देव बत्र, डॉ. विरेंद्र मलिक, डॉ. एमएस दलाल, डॉ. केढ़ा सहरावत, डॉ. योगेन्द्र कुमार और डॉ. एसके पाहुजा शामिल थे। इनके साथ डॉ. अनिल कुमार, डॉ. एलके चूथ, डॉ. नरेंद्र सिंह, डॉ. कुशल राज व डॉ. एम. गोविंदराज व डॉ. आनंद कनाति (हैदराबाद) का भी विशेष

सहयोग रहा है। इस किस्म में अन्य किस्मों के मुकाबले लौह तत्व एवं जिंक क्रमशः 83 व 42 मिलीग्राम प्रति किलोग्राम पाया जाता है। सामान्य किस्मों में इनकी मात्रा क्रमशः 45-55 व 20-25 मिलीग्राम प्रति किलोग्राम होती है। अच्छा रखरखाव करने पर एचएचबी 311 किस्म 18.0 विवरंटल प्रति एकड़ तक पैदावार देने की क्षमता रखती है। यह किस्म जोगिया रोगरोधी है व अन्य किस्मों की तुलना में सूखा चारा व उपज अधिक देने की क्षमता है। यह किस्म 75 से 80 दिनों में पकाकर तैयार हो जाती है। इसके अलावा विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों ने एचएचबी 223, एचएचबी 197, एचएचबी 67 (संशोधित), एचएचबी 226, एचएचबी 234, एचएचबी 272 किस्में भी विकसित की हैं। अनुसंधान निदेशक डॉ. एसके सहरावत ने बताया कि इनकी उच्च अनाज और उपजाऊ क्षमता व लौह तत्व की मात्रा और रोग प्रतिरोधिकता को व्यान में रखते हुए एचएचबी 311 को राष्ट्रीय स्तर पर खेती के लिए इसकी सिफारिश की गई है। इसके तहत जोन-ए जिसमें

प्रदेश, पंजाब और दिल्ली और जोन बी में महाराष्ट्र और तमिलनाडु के लिए खरीफ सीजन के लिए इसकी सिफारिश की गई है। बाजरा हरियाणा एवं पूरे भारत में गेहूं धान, मक्का एवं ज्वार के बाद उगाई जाने वाली एक मुख्य खाद्यान्न फसल है। इस किस्म के दानों में ग्लूटेन लगभग न के बराबर होता है जबकि गेहूं में यह मुख्य प्रोटीन होता है जो की सिलिंक्र, स्व.प्रतिरक्षित रोग, एथेरोस्कलरोसिस, एलर्जी और आंतों की पारगम्यता बिमारी का मुख्य कारण है। इसलिए उक्त बीमारी वाले लोगों को डाक्टर द्वारा बाजरा खाने की सलाह दी जाती है। बाजरे का सेवन टाइप-2 डायबिटीज को रोकने में सहायक है। इनकी इन्हीं विशेषताओं के कारण इसे न्यूट्री सीरियल नाम दिया गया है। विश्वविद्यालय के कुलपति प्रोफेसर सम्म सिंह ने कहा कि विश्वविद्यालय के लिए यह बहुत ही गौरव की बात है कि वैज्ञानिक अपनी कड़ी मेहनत व लगन से विश्वविद्यालय का नाम रोशन कर रहे हैं। बाजरे की नई किस्में विकसित करने वाली पूरी टीम बधाई की पात्र है।



# चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम.....पंजाब केसरी  
दिनांक १७.११.२०२० पृष्ठ संख्या.....२ कॉलम.....६-८

## ‘किसी भी व्यवसाय को शुरू करने से पहले तकनीकी ज्ञान जरूरी’

खुम्ब उत्पादन तकनीक पर 3 दिवसीय ऑनलाइन प्रशिक्षण शुरू

हिसार, 26

नवम्बर (ब्यूरो): किसी भी व्यवसाय को शुरू करने से पहले उसका तकनीकी ज्ञान होना बहुत जरूरी है। बिना तकनीकी ज्ञान व रणनीति के कोई भी व्यवसाय



सफल नहीं होता। प्रशिक्षण शिविर के दौरान प्रतिभागियों से ऑनलाइन विचार साझा करते वैज्ञानिक। ये विचार सायना

नेहवाल कृषि प्रौद्योगिकी प्रशिक्षण एवं शिक्षण संस्थान के सह-निदेशक (प्रशिक्षण) डा. अशोक गोदारा ने व्यक्त किए।

वे चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के सायना नेहवाल कृषि प्रौद्योगिकी प्रशिक्षण एवं शिक्षण संस्थान में 3 दिवसीय ‘खुम्ब उत्पादन तकनीक’ विषय पर ऑनलाइन प्रशिक्षण शिविर के शुभारंभ अवसर पर प्रशिक्षणार्थियों को संबोधित कर रहे थे। प्रशिक्षण का आयोजन विस्तार शिक्षा निदेशक डा. आर.एस. हुड्डा के मार्गदर्शन व देखरेख में किया जा रहा है।

उन्होंने कहा कि किसी व्यवसाय को शुरू करने

से पहले इसके बाजारीकरण की जानकारी होना जरूरी है, क्योंकि जब तक उत्पादों को बाजार में उचित मूल्य नहीं मिलेगा तब तक सही मुनाफा नहीं कमा सकते। किसानों व बेरोजगार युवाओं से आह्वान करते हुए इस प्रशिक्षण का अधिक से अधिक लाभ उठाने की अपील की।

संयोजिका डा. पवित्रा कुमारी ने बताया कि इस प्रशिक्षण में प्रदेश के विभिन्न जिलों के 35 प्रतिभागी हिस्सा ले रहे हैं। इस दौरान मशरूम से जुड़े विभिन्न विषयों पर अपने व्याख्यानों से प्रतिभागियों को अवगत करवाया जाएगा व मशरूम के बारे में विस्तारपूर्वक जानकारी दी जाएगी।



## चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम..... जमात

दिनांक 27.11.2020 पृष्ठ संख्या..... 3 कॉलम..... 3-4

### किसी भी व्यवसाय को शुरू करने से पहले तकनीकी ज्ञान जरूरी : डॉ. गोदारा

अमर उजाला ब्यूरो

हिसार। किसी भी व्यवसाय को शुरू करने से पहले उसका तकनीकी ज्ञान होना बहुत जरूरी है।

बिना तकनीकी ज्ञान व रणनीति के कोई भी व्यवसाय सफल नहीं होता। यह बात साधना नेहवाल कृषि प्रौद्योगिकी प्रशिक्षण एवं शिक्षण संस्थान के सहनिदेशक (प्रशिक्षण) डॉ. अशोक गोदारा ने कही। वे चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के साधना नेहवाल कृषि प्रौद्योगिकी प्रशिक्षण एवं शिक्षण संस्थान में तीन दिवसीय खुंभ उत्पादन तकनीक विषय पर ऑनलाइन प्रशिक्षण शिविर के शुभारंभ अवसर पर वीरवार को प्रशिक्षणार्थियों को संबोधित कर रहे थे।

प्रशिक्षण का आयोजन विस्तार शिक्षा निदेशक डॉ. आरएस हुड्डा के मार्गदर्शन व देखरेख में किया जा रहा है। डॉ. गोदारा ने कहा कि किसी व्यवसाय को शुरू करने से पहले इसके बाजारीकरण की जानकारी होना जरूरी है, क्योंकि जब तक उत्पादों को बाजार में उचित मूल्य नहीं मिलेगा तब तक सही मुनाफा नहीं कमा सकते। किसानों व बेरोजगार युवाओं से आह्वान करते हुए इस प्रशिक्षण का अधिक से अधिक लाभ उठाने की अपील की। प्रशिक्षण की संयोजक डॉ. पवित्रा कुमारी ने बताया कि इस प्रशिक्षण में प्रदेश के विभिन्न जिलों के 35 प्रतिभागी हिस्सा ले रहे हैं। इस दौरान मशरूम से जुड़े विभिन्न विषयों पर अपने व्याख्यानों से प्रतिभागियों को अवगत करवाया जाएगा।



## चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम.....  
*लोक संपर्क जागरण*

दिनांक 27.11.2020 पृष्ठ संख्या..... 4 ..... कॉलम..... 6-8 .....

### किसी भी व्यवसाय को शुरू करने से पहले तकनीकी ज्ञान जरूरी : डा. एके गोदारा

जागरण संवाददाता, हिसार: किसी भी व्यवसाय को शुरू करने से पहले उसका तकनीकी ज्ञान होना बहुत जरूरी है। बिना तकनीकी ज्ञान व रणनीति के कोई भी व्यवसाय सफल नहीं होता। ये विचार साधना नेहवाल कृषि प्रौद्योगिकी प्रशिक्षण एवं शिक्षण संस्थान के सह-निदेशक (प्रशिक्षण) डा. अशोक गोदारा ने कहे। वे चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के साधना नेहवाल कृषि प्रौद्योगिकी प्रशिक्षण एवं शिक्षण संस्थान में तीन दिवसीय खुंब उत्पादन तकनीक विषय पर ऑनलाइन प्रशिक्षण शिविर के शुभारंभ अवसर पर प्रशिक्षणार्थियों को संबोधित कर रहे थे।

**प्रशिक्षण से बाजार की मिलती है जानकारी**  
किसी व्यवसाय को शुरू करने से पहले इसके बाजारीकरण की जानकारी होना जरूरी है क्योंकि जब तक उत्पादों को बाजार में उचित मूल्य नहीं मिलेगा तब तक सही मुनाफा नहीं कमा सकते। किसानों व बेरोजगार युवाओं से आहवान करते हुए इस प्रशिक्षण का अधिक से अधिक लाभ उठाने की अपील की।

**खुम्ब के पोषक तत्व बताए**  
इस ऑनलाइन प्रशिक्षण की संयोजिका डा. पवित्रा कुमारी ने बताया कि इस प्रशिक्षण में प्रदेश के विभिन्न जिलों के 35 प्रतिभागी हिस्सा ले रहे हैं। इस दौरान मशरूम से जुड़े विभिन्न विषयों पर अपने व्याख्यानों से प्रतिभागियों को अवगत करवाया जाएगा व मशरूम के बारे में विस्तारपूर्वक जानकारी दी जाएगी। उन्होंने मशरूम से होने वाले लाभ और मशरूम के पोषक व औषधीय गुणों के बारे में प्रतिभागियों को अवगत कराया। उन्होंने प्रशिक्षणार्थियों को मशरूम की खाद तैयार करने की विधि के बारे में भी विस्तार से जानकारी दी।



## चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम.....  
लोक संपर्क मंत्रालय

दिनांक 27.11.2020 पृष्ठ संख्या..... 2 ..... कॉलम..... 8 .....



एचएयू के प्रशिक्षण शिविर के दौरान प्रतिभागियों से ऑनलाइन रुबरू होते वैज्ञानिक।

### व्यवसाय को शुरू करने से पहले तकनीकी ज्ञान जरूरी : डॉ. गोदारा

हिसार किसी भी व्यवसाय को शुरू करने से पहले उसका तकनीकी ज्ञान होना बहुत जरूरी है। बिना तकनीकी ज्ञान व रणनीति के कोई भी व्यवसाय सफल नहीं होता। यह विचार सायना नेहवाल कृषि प्रौद्योगिकी प्रशिक्षण एवं शिक्षण संस्थान के सह-निदेशक (प्रशिक्षण) डॉ. अशोक गोदारा ने व्यक्त किए। वे एचएयू के सायना नेहवाल कृषि प्रौद्योगिकी प्रशिक्षण एवं शिक्षण संस्थान में तीन दिवसीय 'खुम्ब उत्पादन तकनीक' विषय पर ऑनलाइन प्रशिक्षण शिविर के शुभारंभ पर संबोधित कर रहे। प्रशिक्षण का आयोजन विस्तार शिक्षा निदेशक डॉ. आर.एस. हुड्डा के मार्गदर्शन किया जा रहा है।



## चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
सच कहूँ	27.11.2020	--	--

### किसी भी व्यवसाय को शुरू करने से पहले तकनीकी ज्ञान जरूरी : डॉ. गोदारा

#### ■ खुम्ब उत्पादन तकनीक पर तीन दिवसीय ऑनलाइन प्रशिक्षण थरु

हिसार (सच कहूँ चूज)। किसी भी व्यवसाय को शुरू करने से पहले उसका तकनीकी ज्ञान होना बहुत जरूरी है। बिना तकनीकी ज्ञान व रणनीति के कोई भी व्यवसाय सफल नहीं होता। यह बात साधना नेहवाल कृषि प्रौद्योगिकी प्रशिक्षण एवं शिक्षण संस्थान के सह-निदेशक (प्रशिक्षण) डॉ. अशोक गोदारा ने हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के साधना नेहवाल कृषि प्रौद्योगिकी प्रशिक्षण एवं शिक्षण संस्थान में तीन दिवसीय 'खुम्ब उत्पादन तकनीक' विषय पर ऑनलाइन प्रशिक्षण शिविर के शुभारंभ अवसर पर प्रशिक्षणार्थियों को सर्वोथित करते हुए कही। उन्होंने कहा कि किसी व्यवसाय को शुरू करने से पहले इसके बाजार की जानकारी होना जरूरी है क्योंकि जब तक उत्पादों को बाजार में उचित मूल्य नहीं मिलेगा तब तक सही मुनाफा नहीं कमा सकते। किसानों व बैरोजार युवाओं से आह्वान करते हुए इस प्रशिक्षण का अधिक से अधिक लाभ उठाने की आपील की। खुम्ब के पोषक तत्वों से कराया अवगत इस ऑनलाइन प्रशिक्षण की संयोजिका डॉ. पवित्रा कुमारी ने बताया कि इस प्रशिक्षण में प्रदेश के विभिन्न जिलों के 35 प्रतिभागी हिस्सा ले रहे हैं। इस दौरान मशरूम से जुड़े विभिन्न विषयों पर अपने व्याख्यानों से प्रतिभागियों को अवगत करवाया जाएगा व मशरूम के बारे में विस्तारपूर्वक जानकारी दी जाएगी। उन्होंने मशरूम से होने वाले लाभ और मशरूम के पोषक व अपौष्टीय गुणों के बारे में प्रतिभागियों को अवगत कराया। उन्होंने प्रशिक्षणार्थियों को मशरूम की खाद तैयार करने की विधि के बारे में भी विस्तार से जानकारी दी।



## चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
हैलो हिसार	27.11.2020	--	--

### किसी भी व्यवसाय को शुरू करने से पहले तकनीकी ज्ञान जरूरी : डॉ. ए.के. गोदारा

हैलो हिसार न्यूज़

हिसार : किसी भी व्यवसाय को शुरू करने से पहले उसका तकनीकी ज्ञान होना बहुत जरूरी है। बिना तकनीकी ज्ञान व रणनीति के कोई भी व्यवसाय सफल नहीं होता। ये विचार सायना नेहवाल कृषि प्रौद्योगिकी



#### खुम्ब उत्पादन तकनीक पर तीन दिवसीय ऑनलाइन प्रशिक्षण शुरू

प्रशिक्षण एवं शिक्षण संस्थान के सह - निदेशक (प्रशिक्षण) डॉ. अशोक गोदारा ने कहे। वे चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के सायना नेहवाल कृषि प्रौद्योगिकी प्रशिक्षण एवं शिक्षण संस्थान में तीन दिवसीय

'खुम्ब उत्पादन तकनीक' विषय पर ऑनलाइन प्रशिक्षण शिविर के शुभारंभ अवसर पर प्रशिक्षणार्थियों को संबोधित कर रहे थे। प्रशिक्षण का आयोजन विस्तार शिक्षा निदेशक डॉ. आर.एस. हुड्डा के मार्गदर्शन व देखरेख में किया जा रहा है। उन्होंने कहा कि किसी व्यवसाय को शुरू करने से पहले इसके बाजारीकरण की जानकारी होना जरूरी है क्योंकि जब तक उत्पादों

को बाजार में उचित मूल्य नहीं मिलेगा तब तक सही मुनाफा नहीं कमा सकते। किसानों व बेरोजगार युवाओं से आहवान करते हुए इस प्रशिक्षण का अधिक से अधिक लाभ उठाने की अपील की।

**खुम्ब के पोषक तत्वों से कराया अवगत**  
इस ऑनलाइन प्रशिक्षण की संयोजिका डॉ. पवित्रा कुमारी ने बताया कि इस प्रशिक्षण में प्रदेश

के विभिन्न जिलों के 35 प्रतिभागी हिस्सा ले रहे हैं। इस दौरान मशरूम से जुड़े विभिन्न विषयों पर अपने व्याख्यानों से प्रतिभागियों



## चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
एचआर ब्रेकिंग न्यूज	27.11.2020	--	--

# किसी भी व्यवसाय को थुक्क करने से पहले तकनीकी ज्ञान जट्टी : डॉ. ए.के. गोदारा

एचआर ब्रेकिंग न्यूज

हिसार। किसी भी व्यवसाय को शुरू करने से पहले उसका तकनीकी ज्ञान होना बहुत जरूरी है। बिना तकनीकी ज्ञान व रणनीति के कोई भी व्यवसाय सफल नहीं होता। ये विचार सायना नेहवाल कृषि प्रौद्योगिकी प्रशिक्षण एवं शिक्षण संस्थान के सह-निदेशक(प्रशिक्षण)डॉ. अशोक गोदारा ने कहे। ये चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के सायना नेहवाल कृषि प्रौद्योगिकी प्रशिक्षण एवं शिक्षण संस्थान में तीन दिवसीय 'खुम्ब उत्पादन तकनीक' विषय पर ऑनलाइन प्रशिक्षण शिविर के शुभारंभ अवसर पर प्रशिक्षणार्थियों को संबोधित कर रहे थे। प्रशिक्षण का आयोजन विस्तार शिक्षा निदेशक डॉ. आर.एस. हुड़डा के मांगदर्शन व देखरेख में किया जा रहा है। उन्होंने कहा कि किसी व्यवसाय को शुरू करने से पहले इसके बाजारीकरण की



खुम्ब के पोषक तत्वों से कराया अवगत : इस ऑनलाइन प्रशिक्षण की संयोजिका डॉ. पवित्रा कुमारी ने बताया कि इस प्रशिक्षण में प्रदेश के विभिन्न जिलों के 35 प्रतिभागी हिस्सा ले रहे हैं। इस दौरान मशरूम से जड़े विभिन्न विषयों पर अपने व्याख्यानों से प्रतिभागियों को अवगत करवाया जाएगा व मशरूम के बारे में विस्तारपूर्वक जानकारी दी जाएगी। उन्होंने मशरूम से होने वाले लाभ और मशरूम के पोषक व औषधीय गुणों के बारे में प्रतिभागियों को अवगत कराया। उन्होंने प्रशिक्षणार्थियों को मशरूम की खाद बींवार करने की विधि के बारे में भी विस्तार से जानकारी दी।

जानकारी होना जरूरी है क्योंकि जब तक किसानों व बेरोजगार युवाओं से आत्मान उत्पादों को बाजार में उचित मूल्य नहीं मिलेगा करते हुए इस प्रशिक्षण का अधिक से अधिक तब तक सही मुनाफा नहीं कमा सकते। लाभ उठाने की अपील की।



## चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
दैनिक सवेरा	27.11.2020	--	--

### हकृति में खुम्ब उत्पादन तकनीक पर 3 + दिवसीय ऑनलाइन प्रशिक्षण शुरू

हिसार, (सोढ़ी) : चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के साथना नेहवाल कृषि प्रौद्योगिकी प्रशिक्षण एवं शिक्षण संस्थान में तीन दिवसीय 'खुम्ब उत्पादन तकनीक' विषय पर ऑनलाइन प्रशिक्षण शिविर वीरवार को शुरू हुआ। इस मौके पर साथना नेहवाल कृषि प्रौद्योगिकी प्रशिक्षण एवं शिक्षण संस्थान के सह-निदेशक डॉ. अशोक गोदारा ने कहा कि किसी भी व्यवसाय को शुरू करने से पहले उसका तकनीकी ज्ञान होना बहुत जरूरी है। बिना तकनीकी ज्ञान व रणनीति के कोई भी व्यवसाय सफल नहीं होता। प्रशिक्षण का आयोजन विस्तार शिक्षा निदेशक डॉ. आर.एस. हुड्डा के मार्गदर्शन व देखरेख में किया जा रहा है। उन्होंने कहा कि किसी व्यवसाय को शुरू करने से पहले इसके बाजारीकरण की जानकारी होना जरूरी है क्योंकि जब तक उत्पादों को बाजार में उचित मूल्य नहीं मिलेगा तब तक सही मुनाफा नहीं कमा सकते। किसानों व बेरोजगार युवाओं से आङ्गन करते हुए इस प्रशिक्षण का अधिक से अधिक लाभ उठाने की अपील की।



## चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
पांच बजे न्यूज	26.11.2020	--	--

### किसी भी व्यवसाय को शुरू करने से पहले तकनीकी ज्ञान जरूरी : डॉ. गोदारा

खुब उत्पादन तकनीक पर तीन दिवसीय ऑनलाइन प्रशिक्षण शुरू

पांच बजे ब्लूज

हिसार। किसी भी व्यवसाय को शुरू करने से पहले उसका तकनीकी ज्ञान होना बहुत जरूरी है। बिना तकनीकी ज्ञान व रणनीति के कोई भी व्यवसाय सफल नहीं होता। ये विचार साधारा नेहवाल कृषि प्रौद्योगिकी प्रशिक्षण एवं शिक्षण संस्थान के सह-निदेशक (प्रशिक्षण) डॉ. अशोक गोदारा ने कहे। वे चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के साथना नेहवाल कृषि प्रौद्योगिकी प्रशिक्षण एवं शिक्षण संस्थान में तीन दिवसीय 'खुब उत्पादन तकनीक' विषय पर ऑनलाइन प्रशिक्षण शिविर के शुभारंभ अवसर पर प्रशिक्षणार्थियों को संबोधित कर रहे थे। प्रशिक्षण का आयोजन विस्तार शिक्षा निदेशक डॉ.

आर.एस. हुड़ा के मार्गदर्शन व देखरेख में किया जा रहा है। उन्होंने कहा कि किसी व्यवसाय को शुरू करने से पहले इसके बाजारीकरण की जानकारी होना जरूरी है क्योंकि जब तक उत्पादों को बाजार में उचित मूल्य नहीं मिलेगा तब तक सही मुनाफा नहीं कमा सकते। किसानों व बेरोजगार युवाओं से आल्हान करते हुए इस प्रशिक्षण का अधिक से अधिक लाभ उठाने की अपील की।

खुब के पोषक तत्वों से कराया अवगत इस ऑनलाइन प्रशिक्षण की संयोजिका डॉ. पवित्रा कुमारी ने बताया कि इस प्रशिक्षण में प्रदेश के विभिन्न जिलों के 35 प्रतिभागी हिस्से ले रहे हैं। इस दौरान मशरूम से जुड़े विभिन्न विषयों पर अपने व्याख्यानों से प्रतिभागियों को अवगत करताव जाएगा व मशरूम के बारे में विस्तारपूर्वक जानकारी दी जाएगी। उन्होंने मशरूम से होने वाले लाभ और मशरूम के पोषक व औषधीय गुणों के

बारे में प्रतिभागियों को अवगत कराया। उन्होंने करने की विधि के बारे में भी विस्तार से प्रशिक्षणार्थियों को मशरूम की खाद तैयार जानकारी दी।



## चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
सिटी पल्स	26.11.2020	--	--

# खुम्ब उत्पादन तकनीक पर तीन दिवसीय ऑनलाइन प्रशिक्षण शुरू

सिटी पल्स न्यूज, हिसार। किसी भी व्यवसाय का शुरू करने से पहले उसका तकनीकी ज्ञान होना बहुत जरूरी है। बिना तकनीकी ज्ञान व रणनीति के कोई भी व्यवसाय सफल नहीं होता। ये विचार सायना नेहवाल कृषि प्रौद्योगिकी प्रशिक्षण एवं शिक्षण संस्थान के सह-निदेशक (प्रशिक्षण) डॉ. अशोक गोदारा ने कहे। वे हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के सायना नेहवाल कृषि प्रौद्योगिकी प्रशिक्षण एवं शिक्षण संस्थान में तीन दिवसीय 'खुम्ब उत्पादन तकनीक' विषय पर ऑनलाइन प्रशिक्षण शिविर के शुभारंभ अवसर पर प्रशिक्षणार्थियों को संबोधित कर रहे थे। उन्होंने कहा कि किसी व्यवसाय को शुरू करने से पहले इसके बाजारीकरण की जानकारी होना जरूरी है क्योंकि जब

### खुम्ब के पोषक तत्वों से कराया अवगत

प्रशिक्षण की संयोजिका डॉ. पवित्रा कुमारी ने बताया कि इस प्रशिक्षण में प्रदेश के विभिन्न जिलों के 35 प्रतिमार्गी हिस्सा ले रहे हैं। उन्होंने प्रशिक्षणार्थियों को मशालम की खाद तैयार करने की विधि के बारे में भी जानकारी दी।

तक उत्पादों को बाजार में उचित मूल्य नहीं मिलेगा तब तक सही मुनाफा नहीं कमा सकते। किसानों व बेरोजगार युवाओं से आहवान करते हुए इस प्रशिक्षण का अधिक से अधिक लाभ उठाने की अपील की।



## चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
नम छोर	26.11.2020	--	--

### व्यवसाय करने से पहले इसके बाजारीकरण की जानकारी होना जरूरी : गोदारा

हिसार. किसी भी व्यवसाय को शुरू करने से पहले उसका तकनीकी ज्ञान होना बहुत जरूरी है। बिना तकनीकी ज्ञान व रणनीति के कोई भी व्यवसाय सफल नहीं होता। ये विचार साधना नेहवाल कृषि प्रौद्योगिकी प्रशिक्षण एवं शिक्षण संस्थान के सह-निदेशक(प्रशिक्षण)डॉ. अशोक गोदारा ने कहे। शिक्षण संस्थान में तीन दिवसीय 'खुम्ब उत्पादन तकनीक' विषय पर ऑनलाइन प्रशिक्षण शिविर के शुभारंभ अवसर पर प्रशिक्षणार्थियों को संबोधित कर रहे थे। उन्होंने कहा कि किसी व्यवसाय को शुरू करने से पहले इसके बाजारीकरण की जानकारी होना जरूरी है क्योंकि जब तक उत्पादों को बाजार में उचित मूल्य नहीं मिलेगा तब तक सही मुनाफा

नहीं कमा सकते। किसानों व बेरोजगार युवाओं से आह्वान करते हुए इस प्रशिक्षण का अधिक से अधिक लाभ उठाने की अपील की। इस ऑनलाइन प्रशिक्षण की संयोजिका डॉ. पवित्रा कुमारी ने बताया कि इस प्रशिक्षण में प्रदेश के विभिन्न जिलों के 35 प्रतिभागी हिस्सा ले रहे हैं। इस दौरान मशरूम से जुड़े विभिन्न विषयों पर अपने व्याख्यानों से प्रतिभागियों को अवगत करवाया जाएगा व मशरूम के बारे में जानकारी दी जाएगी। उन्होंने मशरूम से होने वाले लाभ और मशरूम के पोषक व औषधीय गुणों के बारे में प्रतिभागियों को अवगत कराया। उन्होंने प्रशिक्षणार्थियों को मशरूम की खाद तैयार करने की विधि के बारे में जानकारी दी।



## चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम.....

दिनांक २७. ११. २०२० पृष्ठ संख्या..... २ ..... कॉलम..... ५-८

# इसी महीने के अंत में सीएम पहुंचेंगे एचएयू, विवि सिंथेटिक ट्रैक के उद्घाटन की तैयारियों में जुटा

इंग्लैंड के इंजीनियरों की मदद से तैयार किया रेसलिंग ट्रैक, इंडोर स्टेडियम और बॉक्सिंग हॉल

भास्कर न्यूज़ | हिसार

प्रदेश के खिलाड़ियों के लिए खुशखबरी है। अब वे हिसार के चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय में अंतरराष्ट्रीय स्तर पर पहुंचने की तैयारी कर सकेंगे। करीब एक से दो साल की कड़ी मेहनत के बाद इंग्लैंड के इंजीनियरों की मदद से सिंथेटिक तकनीक से रेसलिंग ट्रैक, इंडोर स्टेडियम और बॉक्सिंग हॉल का निर्माण कार्य पूरा कर दिया गया है। जिसका उद्घाटन इसी माह के अंत में प्रदेश के सीएम मनोहर लाल खट्टर और खेल मंत्री करेंगे। विवि प्रशासन की सीएम ओर से अन्य अधिकारियों से भी बात फाइनल हो चुकी है। हालांकि अभी उद्घाटन कार्यक्रम की तारीख निर्धारित करनी है। एचएयू प्रशासन ने उद्घाटन समारोह को लेकर सभी तैयारियों को अंतिम रूप देना भी शुरू कर दिया है।

दरअसल, करीब एक साल पहले एचएयू में सिंथेटिक तकनीक से बना रेसलिंग ट्रैक, स्पोर्ट्स अर्थोरिटी ऑफ इंडिया द्वारा तैयार इंडोर स्टेडियम और जिंदल स्टील



हिसार के एचएयू स्थित सिंथेटिक तकनीक से तैयार ट्रैक।

### जानिए... वया है सिंथेटिक ट्रैक की खासियत

एचएयू स्थित रेसलिंग ट्रैक और बॉक्सिंग हॉल का उद्घाटन सीएम मनोहर लाल खट्टर करेंगे। इसके लिए उनसे बात भी हो चुकी है। हालांकि अभी उनके आने की तारीख निर्धारित की जानी है। इस माह के अंत में हर हाल में उद्घाटन करा दिया जाएगा। इसके अलावा खेल मंत्री, डिस्ट्री स्पीकर रणवीर गंगवा, विधायक कमल गुप्ता आदि भी उद्घाटन समारोह में शामिल होंगे।” - प्रोफेसर समर सिंह, वीसी, हरियाणा एशिकल्चर यूनिवर्सिटी।

द्वारा निर्माण कार्य चल रहा था। थे। यहीं नहीं निर्माण कार्य भी रुक हालांकि कोरोना के चलते यहां पर गया था। एचएयू सूत्रों के अनुसार खिलाड़ी प्रैक्टिस नहीं कर पा रहे सभी प्रोजेक्ट का काम पूरा किया

जा चुका है। प्राजेक्ट का उद्घाटन करने के लिए नवंबर माह के अंत में सीएम खुद एचएयू पहुंचेंगे।